

पिताश्री जी ब्रह्मा बाबा के दिव्य स्मृति निमित्त उनके द्वारा उच्चारित

18 शिक्षाप्रद अनमोल महावाक्य

1- आप आत्माओं का स्वधर्म शान्ति है। अपने शान्त स्वधर्म में स्थित रह, शान्ति के सागर पिता परमात्मा की याद में रहने से एक सेकण्ड में अशान्त आत्माओं को शान्ति का अनुभव करा सकते हो। वर्तमान समय मैजारिटी आत्माओं को सुख से भी अधिक शान्ति चाहिए। वह एक घड़ी भी शान्ति का अनुभव इतना श्रेष्ठ मानते हैं जैसे भगवान की प्राप्ति हो गई। तो एक सेकण्ड में शान्ति का अनुभव कराने वाले स्वयं शान्त स्वरूप स्थिति में स्थित रहो। पहले स्वयं शान्ति की शक्ति के अनुभवी बनो फिर दूसरों को अनुभव कराओ। कभी किसी के संस्कारों से टक्कर नहीं खाना है, संस्कार मिलाना है। यदि कोई दूसरा गड़बड़ भी करे तो भी आप शान्त रहो, आप गड़बड़ नहीं करो और ही उसको शान्ति का सहयोग दो।

2- सदा शान्त रहना और शान्ति से सर्व कार्य सम्पन्न करना, यह शान्ति की शक्ति कितने भी बड़े विघ्न को सहज समाप्त कर देगी इसलिए शान्ति की शक्ति जमा करो। जैसे खाद गन्दी होती है लेकिन उसमें जब फूल पैदा होता है तो खुशबू वाला होता है। खाद में भी परिवर्तन करने की शक्ति है। खाद स्वयं कैसी भी है लेकिन पैदा करती है — फल, फूल, सब्जियां....। तो आपको भी जब कोई गाली देते हैं आप उसको फूल बनाकर धारण करो। वो गुस्सा करे और आप उसको शान्ति का शीतल जल दो। यही आप शान्त स्वरूप बच्चों का कर्तव्य है।

3- कोई भी कार्य अथवा व्यवहार करते हुए शरीर निर्वाह और आत्म निर्वाह दोनों का बैलेन्स रहे। धन की वृद्धि करते हुए परमात्मा के याद की विधि और धन की वृद्धि दोनों साथ-साथ हों। इसके लिए लौकिक स्थूल कर्म को कर्मयोगी की स्टेज में परिवर्तन करो। सिर्फ कर्म करने वाले नहीं लेकिन कर्मयोगी बनो। कर्म अर्थात् व्यवहार, योग अर्थात् परमार्थ। तो व्यवहार और परमार्थ दोनों साथ-साथ रहें।

4- जितना अनेक प्रकार के कर्मों में आते हो, विस्तार में आते हो, रमणीकता में आते हो, सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हो उतना ही न्यारे अर्थात् गम्भीरमूर्त बनने का भी अभ्यास करो। जैसे सम्बन्ध व कर्म में आना सहज है वैसे न्यारा होना भी सहज हो। यह अभ्यास करने से ही गम्भीरता की देवी वा देवता दिखाई देंगे।

जितना बाह्यमुखता में आना सहज है उतना अन्तर्मुखी, गम्भीरमूर्त बनने का अभ्यास करो। इसके लिए एकान्त अर्थात् एक परमात्मा के अन्त में जाकर गम्भीरमूर्त बन किसी एक शक्तिशाली गुण वा कर्तव्य के अन्त में मग्न हो जाओ तो सर्व शक्तियों वा गुणों का खजाना जमा हो जायेगा।

5- गम्भीरता के गुण की धारणा द्वारा जमा का खाता बढ़ाओ। गम्भीरता से अपनी मार्क्स इकट्ठी करो। यदि कोई बाह्यमुखता में आकर अच्छा वर्णन करता है तो अभिमान दिखाई देता है और यदि कोई किसी का बुरा वर्णन करता है तो उसका अपमान होता है। इसलिए अब हर एक गम्भीरता की देवी और गम्भीरता का देवता बनो। वर्तमान समय गम्भीरता की बहुत-बहुत आवश्यकता है क्योंकि जितना प्रभाव गम्भीरता का पड़ता है उतना वाणी का नहीं पड़ता। वास्तविक गम्भीरता में रमणीकता समाई हुई है। ऐसा गम्भीर नहीं बनना है जो उसमें रमणीकता का नाम-निशान भी न हो। यथार्थ गम्भीरता का गुण रमणीकता के गुण सम्पन्न है। जैसे आत्मा सिर्फ शान्त स्वरूप नहीं है, उस शान्त स्वरूप में आनन्द, प्रेम, ज्ञान सभी समाया हुआ है। ऐसे गम्भीरता में रमणीकता समाई हुई हो।

6- आप बच्चों को शुभ भावना अर्थात् रहम दिल की वृत्ति धारण करनी है। कोई कैसी भी आत्मा हो लेकिन अपने रहम की वृत्ति से, शुभ भावना से उसे परिवर्तन करो। जैसे साइन्स वाले रेत में भी अनाज पैदा कर देते हैं, ऐसे साइलेन्स द्वारा धरनी का परिवर्तन करो, इसके लिए शुभ भावना सम्पन्न बनो। शुभ भावना भी बेहद की हो। एक के प्रति विशेष भावना भी हद है। हद में नुकसान है, बेहद में नहीं।

7- किसी की बीती हुई बातों को रहमदिल बन समा दो। यदि कोई अपने संस्कारों के वश कोई उल्टा भी कहता, करता या सुनता है लेकिन आप उसके प्रति भी शुभ भावना रखो, विशेष यह गुण धारण करो कि किसी का सुनना, सुनाना नहीं है लेकिन समाना है। चाहे व्यवहार में रहते हो या प्रवृत्ति को चलाने के कार्य में रहते हो, लेकिन सदा स्व प्रति वा साथियों के प्रति शुभ भावना और कामना से वायुमण्डल रूहानी स्नेहयुक्त बनाने का सहयोग दो। सदा स्व प्रति और सर्व के प्रति सहयोग की शुभ भावना रखते हुए सहयोगी आत्मा बनो। कैसा भी वायुमण्डल हो, व्यक्ति हो, “मुझे सहयोग देना है”—यही शुभ भावना, शुभ कामना सदा रहे।

8- बिगड़े हुए कार्य को, बिगड़े हुए संस्कारों को, बिगड़े हुए मूड को शुभ भावना से ठीक करने में सदा सर्व के सहयोगी बनो — यही है बड़े से बड़ी विशेष देना। इसने यह कहा, यह किया, यह देखते, सुनते, समझते हुए भी अपने सहयोग के स्टॉक द्वारा परिवर्तन कर दो। बेहद की आत्मिक दृष्टि, भाई-भाई के सम्बन्ध की वृत्ति से किसी भी आत्मा के प्रति शुभ भावना रखने का फल जरूर प्राप्त होता है।

9- विश्व का कल्याण करने के लिए पहले स्व-कल्याण सैम्पुल के रूप में दिखाओ। पहले स्वयं में मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो। जो बोलते हो, वह प्रैक्टिकल स्वरूप में देखें। आपके हर संकल्प में विश्व कल्याण की स्मृति रहे। तो स्वयं प्रति भी हर कदम कल्याणकारी की स्मृति, वृत्ति से चलेंगे और चलायेंगे।

चाहे कोई भी काम कर रहे हो, लेकिन अन्दर सदा विश्व-कल्याण की भावना हो। सदा सामने विश्व की सर्व आत्मायें इमर्ज हों। कितनी भी दूर रहने वाली आत्मा को अपनी श्रेष्ठ भावना व श्रेष्ठ कामना के आधार से सेकण्ड में शान्ति व शक्ति की किरणें दो, मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ, इस स्मृति से विश्व को कल्याण की रोशनी दो।

10- अपना समय और सर्व प्राप्तियाँ, ज्ञान, गुण और शक्तियाँ विश्व की सेवा अर्थ समर्पण करो। जो संकल्प उठता है उसे चेक करो कि विश्व सेवा प्रति है? आपका हर बोल रूहानी साज़ के समान उत्साह और उमंग दिलाये जिससे उदास आत्मा खुशी में नाचने लगे, हर कर्म चरित्र के समान गायन योग्य हो। हर सेकेण्ड का सम्पर्क आत्मा को सर्व कामनाओं की प्राप्ति का अनुभव कराये। कोई आत्मा को शक्ति का, कोई को शान्ति का, मुश्किल को सहज करने का, अधीन से अधिकारी बनने का, उदास से हर्षित होने का, छत्रछाया का अनुभव कराये। एक ही समय पर हर सेकेण्ड मन, वाणी और कर्म तीनों द्वारा साथ-साथ सेवा करो तब विश्व-कल्याणकारी बन सकेंगे।

11- अब दुःख-अशान्ति में तड़पती हुई आत्माओं को देखते हुए आप बच्चों को रहम आना चाहिए। अनेक प्रकार के विनाशी सुख-शान्ति में विचलित हुई आत्माएँ, जो अपने असली पिता परमात्मा को और अपने आप को भूल चुकी हैं, ऐसी भूली हुई आत्माओं पर कल्याण की भावना द्वारा उन्हें भी यथार्थ मंजिल बताकर अविनाशी प्राप्ति की अंचलि देने का संकल्प उत्पन्न करो।

12- अगर कोई कुछ राँग कर रहा है तो उसको परवश समझ कर रहम की दृष्टि से परिवर्तन करो, डिसकस नहीं करो। कोई की भी कमी देखकर के उनके वातावरण के प्रभाव में नहीं आ जाओ। उस आत्मा के प्रति रहम की दृष्टि-वृत्ति हो, सामना नहीं करो। यह आत्मा भूल के परवश है इसका दोष नहीं है, इस संकल्प से उस वातावरण का व बात का प्रभाव आप आत्मा पर न हो तब कमल-पुष्प समान न्यारा बन उस पर रहमदिल बन सकेंगे।

13- कैसी भी कोई आत्मा, चाहे सतोगुणी, चाहे तमोगुणी सम्पर्क में आये, लेकिन सभी के प्रति शुभ चिन्तक अर्थात् अपकारी के ऊपर भी उपकार करने वाले बनो। कभी किसी आत्मा के प्रति घृणा दृष्टि न हो। जैसे बेसमझ बच्चे के कोई भी कर्म पर घृणा नहीं होती है, और ही बच्चे के ऊपर रहम वा स्नेह आयेगा। ऐसे शुभ चिन्तक सदैव अपने को विश्व परिवर्तक, विश्व कल्याणकारी समझते हुए आत्माओं के ऊपर रहम करो। सदा शुभ भाव और भावना रखो।

14- जैसे कहीं आग लगी हो तो जो आग बुझाने वाले होते हैं वह आग बुझाने सिवाय रह नहीं सकते। कैसा भी मुश्किल काम हो, प्लैन बनाकर आग को बुझाते हैं। आप भी विघ्न-विनाशक हो, वातावरण को बदलने वाले हो। जैसे कोई स्थूल

नुकसान होता हुआ देख छोड़ नहीं देते, नुकसान को बचाने के लिए दूर से ही भागते हैं, नेचरल बचाने का संकल्प आता है। ऐसे आप भी रहमदिल आत्मायें हो इसलिए कैसी भी अवगुण वाली आत्मा हो, कड़े संस्कार वाली आत्मा हो, कम बुद्धि वाली आत्मा हो, ग्लानि करने वाली आत्मा हो, सर्व आत्माओं के प्रति कल्याणकारी अर्थात् लाफुल और लवफुल बनो। कमजोर आत्माओं को शक्ति देकर आगे बढ़ाओ।

15- आपस में एक दो को पूरा रिगार्ड दो। किसी की सुनी हुई गलती को संकल्प में भी स्वीकार नहीं करना। जैसे कोई अपनी गलती महसूस भी करते हैं लेकिन उसको कभी फैलाते नहीं, बल्कि उसे समाते हैं। यदि दूसरा उसे फैलायेगा तो भी बुरा लगेगा। इसी प्रकार दूसरे की गलती को भी अपनी गलती समझ फैलाना नहीं चाहिए। व्यर्थ संकल्प नहीं चलाने चाहिए, ब्लिक स्नेह की शक्ति से उसे ठीक कर देना चाहिए। बीते हुए संस्कारों की भेंट कभी भी वर्तमान से नहीं करनी है, जब पास्ट को प्रेजेन्ट से मिलाते हो तब संकल्पों की क्यू लगती है और संगठित रूप में एकरस स्थिति नहीं बनती। इसलिए व्यर्थ संकल्पों को फुलस्टॉप दो।

16- यदि आपको किसी की कोई भी बात नहीं जंचती है तो भी एक दूसरे का सत्कार जरूर करना चाहिए। उस समय किसी के संकल्प व बोल कट नहीं करने चाहिए। एकता के लिए सामना करने के बजाए समाने की शक्ति धारण करो। कोई आपके आगे विघ्न रूप भी बने लेकिन आपका भाव उस आत्मा के प्रति शुभ-चिंतक का हो। यदि किसी का आपके प्रति शुभ भाव है और आप भी उसके प्रति शुभ भाव रखते हो तो यह कोई बड़ी बात नहीं है। अपकारी पर उपकार करने वाले का गायन है। कोई बार-बार गिराने की कोशिश करे, आपके मन को डगमग करे, फिर भी उसके प्रति सदा शुभचिंतक का अडोल भाव हो। बात पर भाव न बदले। सदा अचल अटल भाव हो—तब एकमत का संगठन तैयार होगा और विश्व में जय-जयकार होगी।

17- आजकल के वातावरण प्रमाण हर एक स्वतन्त्रता चाहते हैं। सबसे पहली स्वतन्त्रता है पुरानी देह के अन्दर के सम्बन्ध से, इस एक स्वतन्त्रता से आत्मा और सब बातों से सहज ही स्वतन्त्र हो जाती है। जो देह और देह के सम्बन्धों में रहते हुए न्यारे अर्थात् आत्मिक स्वरूप में रहने का विशेष अटेंशन रखते हैं, वही स्वतन्त्र हैं। उसकी किसी में भी मोह की रग नहीं होती। जो सदा माया से मुक्त अर्थात् स्वतन्त्र है वह खुशनुमा है। इसलिए अपने सूक्ष्म-स्थूल सब बंधनों को चेक कर सम्पूर्ण स्वतन्त्र बनो। लौकिक जिम्मेवारियां निभाते हुए मन का बंधन न हो। मन के बंधन से स्वतंत्र होने का साधन है सदा मनमना भव रहना।

18- अपनी जीवन को सदा सन्तुष्ट और खुशनुमः बनाने के लिए सिम्पल रहो। खाना-पीना-पहनना, सब सिम्पल (साधारण) हो। न बहुत ऊंचा, न बहुत नींचा। सिम्पुल अर्थात् सम्पूर्ण पवित्र। निरहंकारी बनना अर्थात् सिम्पल बनना। निरक्रोधी, निर्लोभी बनना अर्थात् सिम्पल बनना। यह सिम्पलिसिटी प्योरिटी का साधन है। जो जितना सिम्पल है वही ब्युटीफुल अर्थात् रायॅल है। ऐसा सिम्पल बनने के लिए माया की नॉलेज से इनोसेंट और ज्ञान में सेंट बनो। जो सिम्पुल नहीं रहते वह औरों के लिए वा अपने लिए कोई न कोई प्राब्लम बन जाते हैं। यदि कोई स्वयं की मन्सा में उलझन अर्थात् प्राब्लम है, तो उसको सिम्पल नहीं कहेंगे। सिम्पल सिर्फ ड्रेस में नहीं लेकिन सभी बातों में सिम्पल रहना अर्थात् सैम्पल बनना। पुरानी आदतों से, पुराने संस्कारों से, पुरानी बातों से, पुरानी दुनिया के फैशन से, सम्बन्धों से पीठ कर लेना ही सिम्पल बनना है। ऐसे सिम्पल रहने वालों को कोई भी आकर्षण अपनी तरफ आकर्षित नहीं कर सकती।